शैक्षिक स्तर के सन्दर्भ में छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

नन्दा द्विवेदी *

पर्यावरण प्रकृति में पायी जाने वाली सभी जैविक एवं अजैविक अन्तःक्रियाओं का योग है। वैसे तो मनुष्य और प्रकृति के बीच सह–अस्तित्व का सम्बन्ध है, परन्तु जैसे–जैसे मनुष्य ने प्रोद्यौगिकी एवं संस्कृति का विकास किया, उसने प्रकृति का प्रचुर दोहन भी किया। उसने जीवन यापन करने की प्राकृतिक प्रणाली को कृत्रिम और अत्यधिक उत्पादन प्रणाली में रूपान्तरित कर दिया। परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का वृहद शोषण, अनियंत्रित विकास और पर्यावरण संकट पैदा होता गया।

पर्यावरण के संरक्षण हेतु यह आवश्यक है कि लोगों के बीच पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से जागरूकता पैदा की जाय। पर्यावरण शिक्षा ही एक ऐसी बहुआयागी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य एवं उसके पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों को समझा जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक पर्यावरण के प्रति जागरूक हों, और अपनी शिक्षा के माध्यम से छात्रों में गुणवत्तापूर्ण जीवन एवं गुणवत्ता युक्त पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा दें। पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर पूर्व में किये गये अनुसंधानों एवं उनके निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि पर्यावरणीय शिक्षा से विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होती है।

देवपुरिया (1984) ने अपने अध्ययन में पाया कि विज्ञान शिक्षण का पर्यावरणीय जागरुकता व अभिवृत्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साहू एवं गुप्ता (2000) ने 10+2 स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरुकता के अध्ययन में पाया कि उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति समूहों में निम्न वैज्ञानिक अभिवृत्ति समूहों की अपेक्षा अधिक जागरुकता पायी जाती है। वर्मा व अन्य (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि पर्यावरणीय अभिवृत्ति का बालक/बालिकाओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि लिंग से प्रभावित होती है। पर्यावरणीय अभिवृत्ति के सन्दर्भ में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की उपलब्धि अधिक है। शहनवाज (1990) ने ग्रामीण माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया। गोपालकृष्णन् (1992) ने प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के अध्ययन में पाया कि इनमें पर्यावरण के प्रति अत्यधिक संचेतना होती है। सगालोक (1995) ने अपने अध्ययन में पाया कि पर्यावरणीय ज्ञान से दक्ष शिक्षकों एवं उनके छात्रों में पर्यावरण के प्रति अत्यधिक जागरूकता रहती है। वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के निवारण एवं प्रबन्धन हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालयों में पर्यावरण की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय, क्योंकि

---

* शोध छात्रा–शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

राष्ट्र का निर्माण विद्यालयों से ही प्रारम्भ होता है अतः भावी पीढ़ी में पर्यावरण प्रवन्धन हेतु वांछित कौशल एवं तकनीकी हस्तानान्तरण के कार्य में विद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पर्यावरणीय शिक्षा का समावेशन किया गया; जिससे छात्रों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विकास किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छात्राध्यापिकाओं के शैक्षिक स्तर का पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. शैक्षिक दृष्टि से छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरणीय शिक्षा अभिवृत्ति की तुलना करना।
2. कला और विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श हेतु जीवनदीप महिला महाविद्यालय, बड़ालालपुर, वाराणसी में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं में से यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर 72 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया जिसमें स्नातक स्तर की 38 तथा परास्नातक स्तर की 34 छात्राध्यापिकायें थीं। इन्हीं छात्राध्यापिकाओं में 42 कला संवर्ग एवं 30 विज्ञान संवर्ग की थीं।

प्रयुक्त उपकरण

प्रदत्त संकलन हेतु 'अनुराग मिश्र' द्वारा निर्मित 'पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' का प्रयोग किया गया है एवं आँकड़ों के विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

परिणाम व्याख्याः–

सारणी 1 स्नातक तथा परास्नातक छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण

क्र0सं0	छात्राध्यापिका समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' अनुपात
1.	स्नातक	38	18.76	3.86	5.42*
2.	परास्नातक	34	24.18	2.17	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर की छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिए मध्यमान 18.76 व मानक विचलन 3.86 है जबकि परास्नातक स्तर की छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिए मध्यमान 24.18 व मानक विचलन 2.17 है तथा 'टी' अनुपात का मान 5.42 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शून्य परिकल्पना "शैक्षिक स्तर पर छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरणीय शिक्षा अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकार्य है। अर्थात् दोनों के पर्यावरणीय अभिवृत्ति के बीच अन्तर

होता है। परिणामों से स्पष्ट है कि स्नातक तथा परास्नातक छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पर्यावरणीय शिक्षा की अभिवृत्ति का प्रभाव सकारात्मक है। परास्नातक छात्राध्यापिकाओं में स्नातक छात्राध्यापिकाओं की तुलना में पर्यावरणीय अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक है। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि परास्नातक छात्राध्यापिकाओं में उच्च शैक्षिक उपलब्धि होने के कारण उनकी अभिवृत्ति उनके ज्ञान, अभिरूचि एवं कौशल उनके अभिवृत्ति को अधिक सकारात्मक बनाने में प्रभावी भूमिका निभा रहें हों।

सारणी 2 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलनात्मक विवरण

क्र0सं0	छात्राध्यापिका समूह	संख्या	मध्यमान	मानव विचलन	'टी' अनुपात
1.	कला संवर्ग	42	23.83	4.81	2.96*
2.	विज्ञान संवर्ग	30	28.76	6.29	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिए 'टी' अनुपात का मान 2.96 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। अर्थात् कला और विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है और विज्ञान वर्ग की छात्राध्यापिकायें कला वर्ग की छात्राध्यापिकाओं से इस दृष्टि से अधिक दक्ष होती हैं। उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि कला संवर्ग एवं विज्ञान संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं के बीच पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। विज्ञान संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरणीय अभिवृत्ति कला संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। अर्थात यह कहा जा सकता है कि विज्ञान संवर्ग की छात्राध्यापिकाएँ पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखती हैं।

पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्नातक एवं परास्नातक छात्राध्यापिकाओं के तुलनात्मक अध्ययन में यह परिणाम निकला कि परास्नातक छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति पर्यावरणीय अभिवृत्ति स्नातक छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षाकृत उच्च है। अतः कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय अभिवृत्ति उच्च शैक्षिक उपलब्धि से प्रभावित होती है।कला एवं विज्ञान संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया गया कि विज्ञान संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं में पर्यावरणीय अभिवृत्ति कला संवर्ग की छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अत्यधिक है। अतः कहा जा सकता है कि छात्राध्यापिकाओं में विज्ञान विषय की शिक्षा पर्यावरणीय अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ :

गोपालकृष्णन, जी0 (1992) : इम्पैक्ट ऑफ एनवायरमेन्ट एजुकेशन आन द प्राइमरी स्कूल एजुकेशन पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, अविनाश लिंगम् इंस्टीट्यूट।

देवपुरिया, आर0पी0 एवं सबलोक रोली (1995) 'ए स्टडी ऑफ दि अवेयरनेस, एटिट्यूड ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेण्ट्स ऑफ हाईस्कूल टूवर्ड्स एनवायरमेन्टल एजुकेशन इन जबलपुर डिस्ट्रिक्ट, पी–एच0डी0 शिक्षा, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।

एन0सी0टी0ई0 (1998) : करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली।

पाण्डेय, आर0एस0 एवं मिश्रा, के0एस0 (1991) 'मूल्य शिक्षा' : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

शहनवाज, (1990) : एनवायरनमेण्टल अवेयरनेस एण्ड इनवायरन्मेन्टल एटीट्यूड ऑफ सेकेण्ड्री एण्ड हायर सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स एण्ड स्टूडेण्ट्स, पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय।

सेन गुप्ता, चन्दन (2000) : भारतीय वातावरण में मूल्य बोध आधारित शिक्षा, आधुनिक भारतीय शिक्षा, 36.

सभालोक, आर0 (1995) : ए स्ट्डी ऑफ दी एवेयरनेस एण्ड एटीट्यूड ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेण्ट्स ऑफ हाईस्कूल टूवर्डस इन्वायरनमेन्टल एजुकेशन इन जबलपुर डिस्ट्रिक्ट। *इण्डियन डिजर्टेशन एब्सट्रैक्ट्स.* 1,.

शर्मा, आर0ए0 (2000) : एनवारमेण्टल एजुकेशन मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।

वर्मा अरुणा एवं अन्य (2005) : विज्ञान विषय में उपलब्धि पर पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव। *भारतीय आधुनिक शिक्षा,* एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, वर्ष 24, अंक–1, जुलाई, 2005, 88–95.

ooo